SHRI ARJUN ARORA: May I know what is the Government's conception of habitual offenders under the Foreign Exchange Regulation Act, whose passports they say they have forfeited? May I know whether the imposition of a fine by the appropriate authorities once is sufficient or the offence has to be repeated before the passport is forfeited?

SHRI DINESH SINGH: We are generally guided by the advice of the Ministry of Finance in this matter or the dealing authority. But even if the person is convicted once, I take it that his passport is taken away for a period of time.

SHRI ARJUN ARORA: May I know whether the Minister is aware of the fact that several leading industrialists have been fined more than once for violation of foreign exchange regulations and that they are frequently seen going abroad? To mention only two names, Shri Shanti Prasad Jain and Shri Ram Ratan Gupta have been fined more than once still they are going abroad. May I know why their passports have not been forfeited?

SHRI DINESH SINGH: As I mentioned earlier, in this matter we are guided by the Ministry of Finance. I shall certainly have these two cases examined.

SHRI SURESH J. DESAI: May I know if it is a fact that there is no law in the country under which passports are issued or denied and the Government have merely to issue instructions to the carriers not to carry any passenger out of the country without a valid passport? Does the Government contemplate to regularise the whole affair by a suitable law?

SHRI DINESH SINGH: Sir, we are looking into the question of introducing some rules and regulations in this matter. I cannot say offhand when a law will be brought into being. It will be necessary to bring in a law in this country.

SHRI SANTOKH SINGH: May I know if there is any relation between the travel abroad and the useful work done there?

SHRI DINESH SINGH: I take it that all travellers who are going out will be doing useful work either for themselves or for the country.

STEPS TO CHECK ACTIVITIES OF HOSTILE NAGAS AND MIZOS

*140. SHRI JAGAT NARAIN: Will the Minister of EXTERNAL AFFAIRS be pleased to state:

(a) whether Government have recently taken any steps with the Government of Burma in order to check or contain the activities of the hostile Nagas and the hostile Mizos;

(b) if so, the nature of those steps taken; and

(c) the results so far achieved as a result thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI DINESH SINGH): (a) to (c) We have continued to maintain contact with the Government of Burma in preventing underground Nagas and Mizos from using their territory as a corridor for crossing over to Pakistan or as a sanctuary. The Government of Burma has been co-operating with us.

श्री जगत नारायण : क्या वजीर साहब बतायेंगे कि उनकी इंटेलीजेंस ने क्या अभी तक उनको यह इत्तिला दी है कि कितने नागा बर्मा के रास्ते हिन्दुस्तान में दाखिल हुए हैं आज तक ?

श्री दिनेश सिंह : सभापति महोदय, एकदम तो नहीं कह सकता। बीच-बीच में सवाल आते रहते हैं, हमने सदन को सूचना दी है।

श्री जगत नारायण : प्रधान मंत्री भी यह ऐलान करती रहती हैं कि हिन्दुस्तान चीन और पाकिस्तान का मुकाबला करने के लिए बिलकुल तैयार है। हमारे फारेन मिनिस्टर भी कहते रहते हैं, डिफेंस मिनिस्टर भी यही ऐलान करते रहते हैं। क्या वजीर साहब बतलायेंगे कि फिर क्या वजह है कि 9 साल से होस्टाइल नागाज़ को काबू नहीं कर सके, पिछले कई महीनों से होस्टाइल मिज़ोज़ को काबू नहीं कर सके ? क्या इससे हिन्दुस्तान

का इमेज कम नहीं होता कि यह बयान देते रहते हैं, लड नहीं सकते, अपना घर ठीक नहीं कर सकते ?

श्री दिनेश सिंह : घर के मामले ठीक करना ज्यादा मुश्किल होता है। जहां तक भारत के इमेज की बात कही माननीय सदस्य ने, उसका एक मौका आया था जबकि यहां के सिपाहियों ने, बहादुरों ने और देश की जनता ने बहुत अच्छा उदाहरण दुनिया के सामने रखा। जहां तक नागा और मिज़ों का सवाल है, वहा जगली इलाका है, बीच में कई लोग चले जाते हैं, हम उनको रोकने की कोशिश करते हैं, लेकिन यह कहें कि हम बिलकुल उसको बन्द कर सकें—यह कठिन है। इतनी बड़ी सरहद है, कुछ लोग इधर-उधर चले जाएं तो रोकना मुश्किल होता है। फिर भी मै कहूंगा कि हमको कोशिश करनी चाहिए और हम निरंतर कोशिश कर रहे हैं।

SARDAR SWARAN SINGH : If I may add, we should make a distinction and this should not be lost sight of that there is a distinction in preparedness to meet external aggression and the same type of methods, the same quantum of pressure, should not be exercised normally in meeting our internal problems. Let us not forget that the Mizos and the Nagas are Indians and while dealing with them we should have to bring about a different attitude as compared to meeting any aggression from outside.

सरदार रघुबीर सिंह पंजहज़ारी : क्या माननीय मंत्री जी यह बतलाने की कृपा करेंगे कि क्या उनके पास ऐसी न्यूज आई है कि हाल ही में चाइना से कुछ बम और लेटेस्ट असला नागालेंड में आया और उसे उनका मिलिट्री विंग नागाज़ को डिस्ट्रीब्यूट कर रहा है? गवर्नमेंट इस पर क्या एक्शन ले रही है ?

श्री दिनेश सिंह : माननीय सदस्य ने जो कहा मुझे उसके बारे में कोई खबर नहीं है।

श्री नरेन्दर सिंह बार : क्या यह गवर्नमेंट की नरम पालिसी का नतीजा तो नही है कि हम हर चीज को एफेक्टिवली डील नहीं करते ? इसी तरह से जो नागाओं का सवाल है या मिजो का सवाल है, उनको भी हम एफेक्टिवली डील नहीं करते। क्या यह हमारी वीक पालिसी की वजह से है ?

श्री सभापति : क्या यह गवर्नमेंट की नरम पालिसी की वजह से है ?

श्री स्वर्ण सिंह : गवर्नमेंट की दुरुस्त पालिसी है। कई भाई उसे नरम समझते हैं, कई गरम समझते हैं। जिनको लगता है उनको पता चलता है कि गरम है या नरम। कुछ ऐसे मौके होते हैं जहां नरमी का भी सलूक करते हैं।

SHRI K. SUNDARAM : Is it true that the Burmese are freely allowed to enter into India with visas issued by our Consulate while there is no reciprocal arrangement with the Burmese Consulate in Delhi.

SHRI DINESH SINGH : No, Sir, that is not true. Visas are given to Indian citizens also wanting to go to Burma. One has to conform to the rules of the country.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : क्या श्रीमान यह बतलायेंगे कि जो बर्मा सरकार से बातचीत हुई और बर्मा सरकार ने सहयोग देने की बात प्रगट की तो जिन मुद्दों के लिए हमने उन्हें लिखा उनमें किन स्पेसिफिक बातों पर उनसे सहयोग प्राप्त हो रहा है ?

श्री दिनेश सिंह : माननीय सदस्य को मालूम होगा कि कुछ दिन पहले कुछ नागा यहां से बर्मा के रास्ते पाकिस्तान जा रहे थे, तब उनको बर्मा के अधिकारियों ने पकड़ लिया था और उन्हें जेल में रख दिया था।

श्री जगत नारायण : अभी वजीर साहब ने बताया कि मुल्क के इन्टर्नल हालात में और तरह से बर्ताव करते हैं। क्या मैं उनसे पूछ

सकता हूं कि पिछले 9 साल में आप होसटाइल नागाओं का मसला हल नहीं कर सके, पिछले छ: महीने से मिजो का हल नहीं कर सके, अब आपके ख्याल में कितना और अरसा लगेगा इनको हल करने में ?

सरदार स्वर्ण सिंह : अरसा तो कहना कठिन है कि छ: महीने में हो जायगा, साल में हो जायगा। कोशिश करनी चाहिए। आप जानते हैं कि मिजो के मामले को तो थोड़े ही महीने हुए जब से वहां गड़बड़ शुरू हुई है और आसाम सरकार उस मामले में दिलचस्पी ले रही है।

श्री जगत नारायण : गड़बड़ तो चल रही है, कल ही अखबार में छपा है . . .

सरदार स्वर्ण सिंह : जो आपकी चिन्ता है उसके लिए मैं मशकूर हूं। हमें भी चिन्ता है और हम कोशिश कर रहे हैं कि जितनी भी जल्दी हो सके हल हो। वे हमारे अपने भाई हैं, वे हिदुस्तान में हिन्दुस्तानी शहरी के नाते, अमनपसन्द शहरी की तरह रह सकें, यही हमारी कोशिश है।

شری عبدالغنی : وزیر صاحب نے فرمایا کہ وہ ہمارے بھائی ہیں۔ یقیناً وہ ہمارے بھائی ہیں لیکن جب بستر میں ضرورت پڑی تو گولی چلا کر سینکڑوں آدمیوں کو ٹھنڈا کر دیا گیا تو پھر ناگا اور میزو کا، جہاں اپنے دیش کی سلامتی کو خطرہ پیدا ہو سکتا ہے، چائنیز اپنا ناجائز فائدہ اٹھا کر ہمیں خراب کریں وہاں گورنمنٹ کیوں نہیں تمام ناگاؤں کو جو پاکستان سے یا چائنا سے ملکر ہندوستان کے امن کو، مفاد کو، نقصان پہنچانا چاہتے ہیں اریسٹ ہی کر لے اگر گولی نہ چلائے!

†[**श्री अब्दुल गनी** : वज़ीर साहिब ने फरमाया कि वे हमारे भाई हैं। यकीनन वे हमारे भाई हैं लेकिन जब बस्तर में जरूरत पड़ी तो गोली चलाकर सैंकड़ो आदमियों को ठंडा कर दिया गया तो फिर नागा और मिज़ो का, जहां अपने देश की स्लामती को खतरा पैदा हो सकता है, चाइनीज अपना नाजायज फ़ायदा उठाकर हमें खराब करें, वहां गवर्नमेंट क्यों नहीं तमाम नागाओं को, जो पाकिस्तान से या चाइना से मिलकर हिन्दुस्तान के अमन को, मफ़ाद को, नुकसान पहुंचाना चाहते है, अरेस्ट ही कर लेती, अगर गोली न चलाए।]

सरदार स्वर्ण सिंह : इसमे कोई सवाल तो नहीं है, एक ख्याल है, जिसका ख्याल जरूर रखा जायगा।

SHRI B. K. P. SINHA : Sir, the underlying assumption of the reply and clarifications from the hon. Minister for External Affairs is that the challenge posed by the Nagas and the Mizos can be met on the plane of conventional warfare though the steps have to be of a milder nature, because it is an internal problem. They are our own brethren, in his own language. But may I know if the Government of India even now realise that conventional warfare cannot meet the challenge of guerilla warfare and special type of military measures have to be concerted, and in addition to this what is more important, a philosophy has to be developed to deal with this sort of warfare ? Therefore, it cannot be met on the same plane as conventional warfare.

SARDAR SWARAN SINGH : I take this suggestion, Sir.

COMMERCIAL BROADCASTING BY A.I.R.

*141 { SHRIMATI LALITHA (RAJAGOPALAN) :‡
SARDAR RAM SINGH :

Will the Minister of INFORMATION AND BROADCASTING be pleased to refer to the answer given to Unstarred Question No. 13 in the Rajya Sabha on the 15th February, 1966 and state :

†[ ] Hindi transliteration.

‡The question was actually asked on the floor of the House by Shrimati Lalitha (Rajagopalan).